fnukd 22 vxLr] 2016 dk vej 'kghn ohj c/k Hkxr d iSr`d xko flykxkbZ e vk;kftr lekjkg d volj ij ekuuh;k jkT;iky egkn;k dk vfHkHkk"k.k

जोहार!

मुझे आज महान देशभक्त वीर बुधु भगत की जन्म स्थली, सिलगाई ग्राम के इस पावन भूमि पर आकर अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। वीर बुधु भगत के वंशज और इस गाँव के सभी लोगों के लिए गौरव एवं हर्ष का विषय है कि वे इस मिट्टी से जुड़े हुए हैं, जहाँ वीर बुधु भगत जैसे भारत माता के सपूत का जन्म हुआ। मैं राष्ट्र के प्रति असीम त्याग करने वाले एवं बलिदानी देशभक्तों को हृदय की गहराई से नमन करती हूँ।

2. हमारा देश वीरों की भूमि है, जिन्होंने राष्ट्र की संतान होने के दायित्वों का निःस्वार्थ भाव से निर्वहन किया और बाह्य ताकतों से इस देश को आजाद कराया। स्वतंत्रता आन्दोलन की इस लम्बी लड़ाई में झारखंड क्षेत्र के महान देशभक्तों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। यहाँ वीर बुधु भगत, अमर शहीद बिरसा मुण्डा, सिदो–कान्हू, चाँद–भैरव, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, शेख भिखारी जैसे कई वीर सपूतों ने अपनी देशभक्ति की भावना से इस राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। ये राष्ट्र इन महापुरूषों का सदा ऋणी रहेगा।

3. झारखड के ऐसे सपूतों में से ही एक थे ''वीर बुधु भगत''। जन्मभूमि के प्रति प्रेम उनके रोम–रोम में था। समाज से उनका अटूट रिश्ता था। यही कारण था कि अंग्रेजों के द्वारा जब छोटानागपुर के लोगों पर अत्याचार, अन्याय एवं शोषण किया जाने लगा तब वीर बुधु भगत जैसे स्वाभिमानी देशभक्त को यह स्वीकार नहीं हुआ और उन्होंने अंग्रेजों के शोषण से अपने समाज को मुक्त करने हेतु युद्ध का ऐलान किया।

4. वीर बुधु भगत में अद्भुत संगठन एवं नेतृत्व क्षमता थी। अंग्रेजी हुकूमत एवं उनके चाटुकारों से अपनी मात.भूमि, संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा हेतु गुरिल्ला युद्ध शुरू किया। भारतवर्ष में 1857 के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन के पहले अंग्रेजों के विरूद्ध झारखण्ड में वर्ष 1831 में ''लरका विद्रोह'' हुआ। अंग्रेजों के शोषण के खिलाफ वीर बुधु भगत के नेतृत्व में पूरा छोटानागपुर, मानभूम, सिंहभूम, पलामू एवं हजारीबाग तक की सभी जनजातियों ने एक होकर अंग्रेजों को मात दी। इसी संघर्ष के दौरान वीर बुधु

भगत शहीद हुए। कई इतिहासकार वीर बुधु भगत के इस अमर योगदान को देश का प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन का उद्‌भव मानते हैं।

5. आज सम्पूर्ण विश्व में भारत को एक सशक्त राष्ट्र के रूप में पहचान मिली है। यह इन्हीं महान देशभक्तों की देन है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का देश की आजादी के लिए त्याग और बलिदान से ही आज हम स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक होने का गौरव प्राप्त कर रहे हैं।

6. अन्त में यह कहना चाहूँगी कि जो लोग अपने लिये कार्य करते हैं, राष्ट्र उनका स्मरण नहीं करता, जिन्होंने समाज के प्रति निःस्वार्थ भाव से योगदान देने का कार्य किया है, उनका नाम सदैव राष्ट्र के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा। इसलिए हमें भी चाहिये कि राष्ट्र एवं समाज के लिए अपना सकारात्मक योगदान देने का कार्य करें, जिससे हमारा राष्ट्र विकास की अनन्त ऊँचाइयों को छू ले।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!